जापते श्रद्धया वै आम्यसि। अहमु वै श्रद्धास्मि। मां नु यजस्व। अथ ते सत्या श्रद्धा भविष्यति। अनु स्वर्गं लोकं वेत्स्यसीति। स एतमाग्नेयमष्टाकपालं निरवपत्। श्रद्धायै चरुम्। अनुमत्यै चरुम्। ततो वै तस्य सत्या श्रद्धाऽभवत्। अनु स्वर्गं लोकमविन्दत्। सत्या ह वा अस्य श्रद्धा भवति। अनु स्वर्गं लोकं विन्दति। य एतेन हविषा यजते। य उ चैनदेवं वेद। सोऽत्र जुहोति। अग्नये स्वाहा श्रद्धायै स्वाहा। अनुमत्यै स्वाहा प्रजापतये स्वाहा। स्वर्गाय लोकाय स्वाहाग्नये स्विष्टकृते स्वाहेति" ॥ ३ ॥ इति ॥

(४) अथ तृतीयामिष्टिं विधत्ते। "तꣳ सत्यमब्रवीत्। प्रजापते सत्येन वै आम्यसि। अहमुवै सत्यमस्मि। मां नु यजस्व। अथ ते सत्यꣳ सत्यं भविष्यति। अनु स्वर्गं लोकं वेत्स्यसीति। स एतमाग्नेयमष्टाकपालं निरवपत्। सत्याय चरुम्। अनुमत्यै चरुम्। ततो वै तस्य सत्यꣳ सत्यमभवत्। अनु स्वर्गं लोकमविन्दत्। सत्यꣳ हवा अस्य सत्यं भवति। अनु स्वर्गं लोकं विन्दति। य एतेन हविषा यजते। य उ चैनदेवं वेद। सोऽत्र जुहोति। अग्नये स्वाहा सत्याय स्वाहा। अनुमत्यै स्वाहा प्रजापतये स्वाहा। स्वर्गाय लोकाय स्वाहाग्नये स्विष्टकृते स्वाहेति" ॥ ४ ॥ इति ॥

(५) अथ चतुर्थीमिष्टिं विधत्ते। "तं मनोऽब्रवीत्। प्रजापते मनसा वै आम्यसि। अहमु वै मनोऽस्मि। मां नु यजस्व। अथ ते सत्यं मनो भविष्यति। अनु स्वर्गं लोकं वेत्स्यसीति।